प्रातःक्लास ओमशांति शिवबाबा याद है? 7.2.68

ओमशांति। मीठे2 रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बाप समझाते हैं और पूछते हैं बुद्धि का ठिकाना कहां है? मनुष्यों की बुद्धि तो बहुत भटकती है ना कब कहां। बाप समझाते हैं तुम्हारे बुद्धि का भटकना बंद। बुद्धि को एक ही ठिकाना लगाओ। बेहद के बाप को ही याद करो। यह तो रुहानी बच्चे जानते हैं सारी दुनियां तमोप्रधान है अर्थात् हम सभी आत्माएं तमोप्रधान हैं। आत्माएं सतोप्रधान थीं नम्बरवार पार्ट अनुसार। अभी तो तमोप्रधान बनी हैं। फिर बाप कहते हैं सतोप्रधान बनना है। इसलिए अपनी बुद्धि को बाप के साथ लगाओ। अभी वापस जाना है। और कोई को भी पता नहीं है कि हमको वापस जाना है। कोई भी नहीं होगा जिसको डायरैक्शन वा श्रीमत मिलती होगी कि बच्चे मुझ बाप को याद करो। कितनी सहज बात समझाते हैं। सिर्फ बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेंगे। और कोई ऐसे समझा नहीं सकते। बाप ही समझाते हैं। जिसमें प्रवेश किया है वह भी सुनते हैं। सबसे अच्छी मत बाप ही देते हैं पतित से पावन बनने की। तो उस पर चलना चाहिए ना। बाप कहते हैं तुम सतोप्रधान थे। अभी फिर बनना है। तुम ही आदि सनातन देवी–देवता धर्म के थे। फिर 84जन्म भोग तुम तमोप्रधान कौड़ी मिसल बन गए हो। जानते हो हम देवी–देवता हीरे मिसल थे। अभी फिर बनना है। बाप सहज बात सुनाते हैं कि अपन को आत्मा समझो। आत्माओं को ही वापस जाना है। शरीर तो नहीं जावेगा। बाप के पास तो खुशी से जाना है। बाप जो श्रीमत देते हैं उससे तुम श्रेष्ठ बनेंगे। प्योर आत्मा बन मूलवतन जाय फिर आकर यह शरीर लेंगे। यह तो निश्चय है ना। वही तात लगी रहे। दैवी गुण भी धारण करनी है। जो अच्छी तरह दैवी गुण धारण करेंगे उनको बहुत फायदा होगा। स्टुडेंट जो अच्छी पढ़ाई पढ़ते हैं वह उंच पद पाते हैं ना। यह भी पढ़ाई है। तुम कल्प2 ऐसे पढ़ते हो। बाप भी कल्प2 ऐसे ही पढ़ाते हैं। जो टाइम पास हुआ , ड्रामाअनुसार ही बाप की और बच्चों की एक्टिविटी चली। बाप राय तो ठीक देते हैं। बच्चे कहते हैं बाबा हम घड़ी2 भूल जाते हैं। यही माया के तूफान हैं। माया दीवा बुझा देती है। बाप को शमा भी कहते हैं। सर्वशक्तिवान, अथॉर्टी भी कहते हैं। जो भी वेद–शास्त्र आदि हैं सबका सार बतलाते हैं ना। वह नालेजफुल है ;क्योंकि सृष्टि ड्रामा के आदि,मध्य,अंत को जानते हैं और हम बच्चों को समझाते हैं। वह बाप कहेंगे तुम बच्चों को समझाता हूं। उसमें यह भी आ जाता है। इसमें मूंझने की कोई बात ही नहीं। यह है बहुत सहज राज्य पाने का रास्ता। राजऋषि हो ना। ऋषि पवित्र आत्मा को कहा जाता है। तो अपन को समझना चाहिए ना। तुम्हारे जैसा ऋषि तो कोई हो न सके। आत्मा को ही ऋषि कहा जाता है। शरीर को नहीं कहेंगे। आत्मा है महाऋषि। राऋषि। राज्य कहां से लेते हैं?बाप से। तो तुम बच्चों को कितनी खुशी रहनी चाहिए। हम शिवबाबा से अपना राज्य–भाग्य फिर से लेते हैं। बाप ने स्मृति दिलाई है तुम विश्व के मालिक थे। फिर पुनर्जन्म लेते2 नीचे उतरते आये हो। देवताओं के चित्र तो हैं ना। मनुष्य समझते हैं .... ज्योति–ज्योत समा गए। अभी बाप ने तुम बच्चों को समझाया है एक भी मनुष्य ज्योति में नहीं समाता है। मुक्ति–जीवनमुक्ति कोई पा न सके। सारा दिन बच्चों का अंदर में विचार चलना चाहिए। जितना याद में रहेंगे उतना ही खुशी होगी। पढ़ाने वाला देखो कौन है। कृष्ण को लॉर्ड कृष्ण भी कहते हैं। भगवान को कब लॉर्ड नहीं कहेंगे। उनको गॉड फॉदर ही कहते हैं। लॉर्ड तो थर्ड क्लास का अक्षर है अभी का। उनको तो कहते ही हैं हैविनली गॉड फॉदर। हैविन स्थापन करने वाला। तुमको अभी दिल से लगता है वही हैविनली गॉड फॉदर हैविन अर्थात् दैवी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। सतयुग में दूसरा कोई धर्म था नहीं। चित्र भी इन देवताओं के ही हैं। उनको ही आदि सनातन देवी–देवता धर्म कहा जाता है। यह विश्व के मालिक थे। उन्हों को कहेंगे सतयुगी। अभी तुम हो संगमयुगी। तो बुद्धि में समझना चाहिए बाबा हमको अभी राइटियस बनाते हैं। हम राइट्स बनते जावेंगे। विकारी को अनराइट्स कहा जाता है। यह देवताएं राइट्स पवित्र थे। लाइट भी पवित्रता की दिखाई है। अनराइट्स अर्थात् राइट कदम नहीं है। शिवालय से उतर वैश्यालय में आ

जाते हैं। यह बातें नया कोई समझ न सके। जब तक उनको तुम बुद्धि में बिठाओ। पहले तो बाबा का परिचय देना है। वही हैविनली गॉडफॉदर स्वर्ग का रचता है। हैविन और हेल अक्षर भी है। सुख और दुःख। स्वर्ग और नर्क। तुम जानते हो भारत में सुख था। अभी दुःख है। फिर बाप आकर सुख देते हैं। अभी दुःख का समय अंत होता है। बाबा सुख की सौगात ले आते हैं बच्चों के लिए। सभी को सुख देते हैं तभी तो सभी वंदना करते हैं। सन्यासी–उदासी आदि भी कोई के लिए तो तपस्या आदि करते हैं। कुछ न कुछ प्राप्ति के लिए आश तो रहती है ना। सतयुग में ऐसी बात नहीं होती। वहां और कोई धर्म वाले होते ही नहीं हैं। तो तुम अभी पुरुषार्थ कर रहे हो सतयुग नई दुनियां में जाने लिए। जानते हो वह है सुखधाम। वह शांतिधाम। वह है दुःखधाम। तुम अभी संगम पर हो। उत्तम पुरुष बनने लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। पुरुषार्थ भी बहुत अच्छी रीत करना है। पढ़ाई से कब भी रूठना न है। कोई से भी अन–बणी हो तो भी पढ़ाई नहीं छोड़नी है। पढ़ाई से लड़ने–झगड़ने का तैलक नहीं। पढ़ेंगे–लिखेंगे होंगे नवाब, लड़ेंगे–झगड़ेंगे तो नवाब थोड़े ही बनेंगे। वह तो फिर तमोप्रधान चलन हो जाती है। हरेक को सदैव अपनी उन्नति का खयाल करना चाहिए। बाप कहते हैं हे आत्माएं बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे और दैवी गुण भी धारण करो अगर ऐसा बनना है तो। बाप ने ही उन्हों को ऐसा बनाया है। बाप कहते हैं तुम ही यह राज्य करते थे। अभी फिर तुमको बनना है। राजयोग बाप संगम पर ही सिखलाते हैं। तुम कल्प2 यह बनते हो। ऐसे नहीं ऐसे नहीं कि सदैव कलियुग ही चल(ता) रहेगा। कलियुग के बाद सतयुग.....यह चक्र जरूर फिरना है। सतयुग में मनुष्य बहुत कम थे। फिर जरूर कम ही होनी चाहिए। यह तो बहुत सहज ही समझने की बातें हैं। बीती हुई कहानी सुनानी है। छोटी सी कहानी है। वास्तव में है बड़ी ;परंतु समझाने में बहुत छोटी है। 84जन्मों का राज़ है। तुमको भी आगे मालूम नहीं था। अभी तुम समझते हो हम पढ़ रहे हैं। यह है संगमयुग की पढ़ाई। अभी ड्रामा का चक्र फिर कर आया है। फिर सतयुग से लेकर शुरू होगा। इस पुरानी सृष्टि को बदलने का है। जंगल का विनाश होगा फिर सतयुग में फूलों का बगीचा होगा। फूल दैवी गुण वाले को कहा जाता है। कांटा आसुरी गुण वाले को कहा जाता है। अपन को देखना है कोई अवगुण तो नहीं है। तुम फील करते हो पहले हमारे में कोई गुण नहीं था। अभी हम देवता बनने लायक बन रहे हैं। तो दैवी गुण जरूर धारण करनी पड़े। बाप,टीचर बन आते हैं तो कैरेक्टर भी जरूर सुधारेंगे ना। मनुष्य भी कहते हैं सभी के कैरेक्टर खराब हैं। अच्छे कैरेक्टर किसको कहा जाता है यह नहीं जानते। तुम ही समझाय सकते हो। इन देवताओं के कैरेक्टर अच्छे थे ना। कब किसको दुःख नहीं देते हैं। अच्छे होते हैं तो कहते हैं ना यह तो सच्ची देवी है। इनकी बोल कितनी मीठी है। बाप कहते हैं तुमको देवता बनाता हूं। तो तुमको भी बहुत मीठा बनना पड़े। दैवी गुण धारण करने हैं। जो जैसा होगा दूसरों को भी ऐसा बनावेगा। तुम सभी को टीचर बनना है। टीचर के बच्चे टीचर। तुम पाण्डव सेना हो ना। पाण्डवों का काम है सभी को रास्ता बताना। दैवी गुण धारण करने हैं। गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है। घर में भी तुम सर्विस कर सकते हो ना। आवेंगे उनको टीच करते रहेंगे। ऐसे बहुत हैं जो अपने पास गीता पाठशाला खोल बहुतों की सर्विस करते रहते हैं। ऐसे नहीं कि यहां आय बैठना है। कन्याओं के लिए तो सहज है। मास दो चक्र लगाया , फिर गए घर। घर का सन्यास तो नहीं करना है। तुमको घर से बुलावा होता है तो जाते हो। मना नहीं है। इसमें कोई घुटकाई की बात नहीं। और ही उमंग आवेगा हम अभी होशियार हुए हैं। घर वालों को भी आप समान बनाय साथ ले जाउंगी। ऐसे बहुत सेंटर्स पर भी जाते हैं, घर में भी सर्विस करते रहते हैं। जब होशियार हो जाती हैं तो बाप मुख्य समझाते हैं अपन को आत्मा समझो। बाप को याद करो। अपनी उन्नति करनी है। घर में रहने वालों की यहां रहने वालों से अच्छी उन्नति होती है। तुमको कब मना नहीं की जाती है कि घर में न जाओ। उन्हों का भी तो कल्याण करना

है। जिनको कल्याण करने की हेर पड़ जावेगी तो फिर वह रह नहीं सकेंगे। बाब सर्विस की युक्तियां तो बहुत बताते रहते हैं। ज्ञान और योग पूरा है तो कोई भी बेइज्जत नहीं करेंगे। योग न है तो फिर माया का थप्पर लगता है। तो गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए कमल फूल समान पवित्र रहना है। बाप तो फ्रीडम देते हैं। भल घर में भी हो। सभी यहां कैसे आकर रहेंगे? जितने आते हैं उन्हों के लिए मकान आदि बनानी पड़ती है। कल्प पहले जो कुछ किया है करते रहेंगे। बच्चे भी वृद्धि को पाते रहेंगे। ड्रामा में नूंध है। ड्रामा बिगर तो कुछ भी होने का नहीं है। यह लड़ाइयां आदि होती हैं, इतने मनुष्य मरते हैं ड्रामा में नूंध है ना। फिर 5000वर्ष बाद यही लड़ाई लगेगा (लगेगी)। जो कुछ पास हुआ है सो फिर रिपीट होगा। जो कल्प2 समझाते हैं वही अभी भी समझाउंगा। मनुष्य भल क्या भी विचार करे। मैं तो वही पार्ट बजाउंगा जो मेरा नूंध हुआ है ड्रामा में। जरा भी कम–जास्ती नहीं हो सकता। जो कल्प पहले पढ़ी थी वही पढ़ेंगे। हरेक की चलन से सा0 भी होता रहता है। यह क्या पढ़ते हैं ,क्या पद पावेंगे? अच्छी सर्विस करते हैं, समझो अचानक एक्सीडेंट हो जाता है तो उसी हालत में अच्छे कुल में जाय जन्म लेंगे। बहुत सुखी रहेंगे। जितना सुख बहुतों को देंगे उतना सुखी घर में जन्म लेंगे। यह कमाई की ..... नहीं है। जहां जीत वहां जन्म जाय लेंगे। बहुतों को सुख दिया होगा तो गोल्डेन स्पून इन माउथ मिलेगा। उससे कम तो सिल्वर स्पून मिलेगा। उससे कम तो पीतल का मिलेगा। समझ में तो आता है ना कितना हमारा योग है। राजा–रानी ,प्रजा तो बनने वाले हैं। अच्छी रीत न पढ़ते हैं ,दैवी गुण धारण नहीं करते हैं तो फिर कम पद। अच्छा वा खराब कर्म सामने जरूर आवेंगे। आत्मा को तो मालूम है ना हम कहां तक सर्विस कर रहे हैं। अगर अभी ही शरीर छूट जाये तो। अभी तुम पढ़ रहे हो ना। रोज2 सुनते2 तुम सुधरते रहेंगे। कोई तो बिगरते भी हैं। फिर पढ़ाई छोड़ देते हैं। कहेंगे ड्रामा। इनके तकदीर में न था। बाप कितना उंच है। विश्व का मालिक बनाते हैं। साईं के दर से कोई खाली नहीं जा सकता। साईं तुम्हारे सम्मुख है ना। कोई को दो अक्षर तुम सुनाते हो वह भी खाली नहीं जावेगा। साधारण प्रजा में पिछाड़ी में भी आवेगा। देवी–देवता धर्म वाले अभी तक आते ही रहते हैं। डीटीज्म तो था ना ;परंतु अभी पतित होने कारण अपन को हिंदू कह देते हैं। तो तुम्हारी बुद्धि में सारा ज्ञान ऐसे है जैसे बाबा में है। बाप ज्ञान का सागर है। बतलाते हैं यह हिस्ट्री–जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है। टीचर भी स्टुडेंट की पढ़ाई से जानते हैं ना यह कितने मार्क्स में पास होगा। हरेक खुद भी समझ सकते हैं। कोई दैवी गुण में कच्चे हैं, कोई ज्ञान में कच्चे, कोई योग में कच्चे। कच्चे होने से फिर नापास हो जावेंगे। ऐसे भी बहुत हैं जो आज कच्चे हैं ,कल पक्के हो सकते। गैलप करते रहेंगे। खुद भी फील करते हैं हम जहां–तहां से फेल होते आये हैं। बरोबर फलानी हमसे अच्छा समझाती है। हां, सीखकर होशियार भी हो सकते हैं। अगर देहाभिमान होगा तो फिर क्या सीख सकेंगे? मैं आत्मा हूं यह तो एकदम पक्का कर लो। बाप ने स्मृति दिलाई है। बाप कहते हैं मुझे याद करो विकर्म विनाश हो जावेंगे और फिर दैवी गुण भी आ जावेंगे। अपनी नब्ज़ देखनी है। नारद का भी एक दृष्टांत बना दी है। देखा ,मैं लक्ष्मी को वर सकता हूं। भक्त तो वर न सके। ज्ञानी ही वर सकते हैं। तुम अभी सृष्टि के आदि,मध्य,अंत की नालेज ले रहे हो। यह राजयोग की नालेज सिवाय बाप के और कोई सिखलाय न सके। बच्चे सीखते जाते हैं। बच्चे पूछते हैं हमारे कुल के ब्राह्मण कितने बने हैं यह मालूम कैसे पड़े? आते–जाते तो बहुत हैं ना। उन ब्राह्मणों में कोई देखो लखपति होंगे ,कोई तो एकदम कखपति होंगे। यह भी अभी ब्राह्मण बन रहे हैं। हिसाब कैसे निकाल सकेंगे? अगर हम सभी को लिख दें कि ब्राह्मणों की लिस्ट नम्बरवार लिखकर भेजो। फर्स्टक्लास ब्राह्मण, सेकंड क्लास और थर्ड क्लास। तो जरूर गुप्त लिस्ट बनाय भेजेंगे ना। नहीं तो किसको मालूम पड़ जाये तो बिगर पड़ें।

आज बाबा सभी सेंटर्स के ब्राह्मणियों को डायरैक्शन देते हैं कि हरेक के सेंटर पर जो ब्राह्मण बच्चे आते हैं, नेमी हैं या कब2 आते हैं, नम्बरवार फर्स्टक्लास, सेकंड क्लास, थर्डक्लास की लिस्ट बनाकर बाबा के पास शिवजयंती के पहले भेज देनी है। शिवजयंती से पहले जिसकी लिस्ट न आई तो मुरली बंद। मालूम तो पड़े ना ब्राह्मण कितने हैं, किस प्रकार के हैं। बाबा के सिवाय और कोई को पता नहीं पड़ेगा। फिर बाबा बता देंगे कि नम्बरवन ,टू,थ्री। ब्राह्मणों के लिए यह लिस्ट आई है। नाम थोड़े ही बतावेंगे। बाबा सभी सेंटर्स के लिए डायरैक्शन दे रहे हैं। सभी लिस्ट बनाकर भेजें। टीचर का तो सर्व का मालूम रहता है ना। फिर बाबा बता देंगे फर्स्टक्लास इतने ब्राह्मण हैं, सेकंड क्लास ,थर्ड क्लास इतने ब्राह्मण हैं। फिर वर्ष/दो और ही वृद्धि को पावेंगे। लगभग इतने ब्राह्मण अभी हैं। बाबा ने देखा नहीं है सभी को। यहां जभी आते हैं तब ही बाबा समझते हैं सर्विसेबुल है वा नहीं। बहुत गिर भी पड़ते हैं। बॉक्सिंग है ना। जब तक आत्माभिमानी न बने तब तक माया का थप्पर लगना बंद नहीं हो सकता। बाबा खुद भी कहते हैं मैं भी कोई कर्मातीत अवस्था को थोड़े ही पाया हुआ हूं। मन्सा में तो बहुतों को तूफान आते हैं देहाभिमान के कारण। अगर तुम अपन को आत्मा समझ दूसरों को भी आत्मा देखते रहेंगे तो फिर माया के तूफान नहीं आवेंगे। यह है मुख्य और डिफिकल्ट बात। सीखने वाले भी वही होंगे जो नम्बरवन में होंगे। माला के दाने बनने वाले होंगे। भाई2 की दृष्टि से देखना है। वह लोग भी कहते हैं हम भाई2 हैं ;परंतु अर्थ नहीं समझते हैं। इस समय जो बाप सिखलाते हैं वह भक्तिमार्ग में चलता है। यह पक्का समझ लो अपन को आत्मा समझो, दूसरे को भी आत्मा की दृष्टि से न देखेंगे तब तक छुई–मुई जरूर होती रहेगी। आत्मा देखने से कोई पाप नहीं लगेंगे। वह अवस्था पिछाड़ी में आनी है। मेहनत है। होना तो जरूर है। यह (ल0ना0) ऐसे हुए हैं तब ही तो यह पद पाया ना। तुम बच्चों को भी पुरुषार्थ करना है ,उंच ते उंच बनना है। तो कैरेक्टर को सुधारो। बच्चों में बहुत ही छी–छी खामियां हैं। यज्ञ में तो बड़ा ही साफदिल चाहिए। लोभ भी न रहे। शुरू से लेकर लोभ ने कितने सभी को दगा दिया। बच्चियां अच्छी2 चीज़ देखती थीं तो छिपाय कर खा लेती थीं। फिर जब कचहरी में पूछा जाता था तो बतलाते थे यह हमसे भूल हुई। माया ने चक पाया। ऐसे तो बहुतों को माया चक पाती है। चक पाये2 एकदम खढा कर देती है। लोभ ऐसा है जो चोरी करने बिगर रह नहीं सकते हैं। बाहर से भी बहुत रिपोर्ट आती रहती है। बाबा फलाने में यह2 आदत है। खुद भी समझ सकते हैं। बाप कहते हैं तुम खुद भी ऐसे काम करते रहेंगे तो फिर दूसरों को भी कैसे समझावेंगे? दिल अंदर खाता जरूर है। हम यह चोरी का काम करते हैं। तब ही कचहरी भी कराते हैं ;परंतु सच्च2 थोड़े ही बतलाते हैं। न बताते हैं तो और ही अपने पर बोझा चढ़ाते हैं। अभी क्या करें? आपे ही अपने सिर पर बोझा डालते हैं। पुरुषार्थ कर अभूल बनना है। नहीं तो हेर पड़ती जावेगी। मर जावेंगे तो भी आदत नहीं मिटेगी। सारा दिन खाना ही खाना। बस खाने की ही तात लगी रहती है। और कुछ नहीं। यह भी तो अवगुण हुआ ना। 5विकारों में सबसे कड़ा है देहाभिमान। फिर काम,क्रोध,लोभ,मोह। हैं तो सब कड़े। मोह भी बहुत कड़ा है। झूठ–कपट,शैतानी सब काम कराते हैं। इसलिए अपन को सुधारना भी है। सुधारेंगे तो अच्छा पद पावेंगे। नहीं तो कम पद। टीचर तो समझाते रहेंगे। पिछाड़ी में सभी को सा0 होगा पढ़ाई का। सा0 करेंगे तब ही सज़ा खावेंगे। बिगर सा0 सज़ा मिल न सके। प्रूफ तो चाहिए ना। सा0 कराने में देरी थोड़े ही लगती है। झट दिखावेंगे तुमने यह–यह किया है। अब खाओ सज़ा। मोचरा और मानी यह बेईज्जत हो जाती है। किसको मार बहुत मिलती है ,मानी थोड़ी मिलती है। किसको मानी जास्ती मिलती है। मोचरा थोड़ी मिलती है। होते तो सब प्रकार के हैं ना। अच्छा, मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रति रुहानी बाप व दादा का यादप्यार, गुडमार्निंग। नमस्ते।

हलो, यादप्यार मधुबन निवासियों का स्वीकार करनाजी, दिल व जान ,सिक व प्रेम से। अच्छा, अब विदाई।

ओमशांति